Rohtas Mahila College, SASARAM.

Study Material: Sanskrit
B.A. Part - 2, Paper: IV

Dr. Savitri Singh.
Associate Professor.
Deptt. of Sanskrit

Topic: "महाकवि कालिदास के साहित्य में प्रकृति-चित्रण"
(अभिज्ञानशाकुंतलम् के सन्दर्भ में)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति-चित्रण के निम्नलिखित पक्ष स्पष्ट हैं

(i) मानव और प्रकृति :- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति भी प्रधान स्थान ग्रहण करती है। पंचम अंक और षष्ठ अंक की कुछ घटनाएँ ही राजमहल में दिखायी गई हैं। षष्ठ अंक में कवि प्रकृति के वर्णन से आरम्भ करता है और राजा को विदूषक के साथ वहीं उपवन के कुंजों, लताओं के बीच खींच लाता है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और सप्तम अंक की सारी घटनाएँ तपोवन में और आश्रम में घटती हैं जो प्राकृतिक वैभव से परिपूर्ण है। नाटक की नायिका शकुन्तला प्रकृति पुत्री है और उसी में पली बढ़ी है। कालिदास की वन की लताएँ अपने गुणों से वाटिका की लताओं को भी तिरस्कृत कर देती हैं:-

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृता: खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभि: ॥

वृक्षों को सींचती हुई शकुन्तला अपनी सखियों से कहती है कि केवल पिता का आदेश ही नहीं है। इनसे मेरा सहोदर जैसा स्नेह भी है

"न केवलं तातनियोग एव, अस्ति मे सोदरस्नेह एतेषु।"

वस्त्र के रूप में वल्कल ही धारण करती है।

→

वृक्षों एवं लताओं के प्रति शकुन्तला के घनिष्ठ संबंध के कारण कण्व उन्हीं से शकुन्तला की विदाई की अनुमति माँगते हैं

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥

आश्रम के मृग एवं मृगी भी प्रकृतिपुत्री शकुन्तला के स्वजन हैं। एक मृग के लिए तो वह मातृतुल्य है। उस मातृहीन को स्नेह ~~लेकर~~ देकर नीवार की मुट्ठियाँ खिलाकर उसने पाला पोसा है, वह विदा के समय उसका मार्ग रोक लेता है—

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे ।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते ॥

क्रमशः

Date:
21.07.20